

ते ऽमुल आगता अस्था पृथिव्यां प्रतिष्ठिताः CAT. Br. 2, 1, 1, 6. अमुतो वै दि-
वो वर्षति 4, 3, 1, 16. 6, 7, 3, 5. 7, 4, 2, 22. 8, 3, 1, 7. 3, 1, 13. u. s. w. इत इम-
मा दधात्यमुतो ऽमुष्य रश्मयः प्राडुर्भवति Nir. 7, 23. — 3) hierauf, alsdann,
ferner: यथोत्तरं दशगुणं भवेदेको दशामुतः । शतं सकृत्सम् u. s. w. H. 873. —
Vgl. अदम्.

अमृत्र (wie eben) adv. Gegens. इह. 1) dort: अमृत्र सन्निह वैत्य AV. 13,
1, 39. यज्ञयमृत्र सत्ययत्नम् CAT. Br. 1, 7, 3, 9. 3, 1, 20. 6, 3, 1, 20. 6, 1, 6.
u. s. w. यदेवेह तदमृत्र यदमृत्र तदन्विह KATHOP. 4, 10. Nir. 4, 25. 11, 37.
dort und dort, an dem und dem Orte: अमृत्राकमासम् VJUP. 9, b. — 2)
dort, da, d. i. im Vorhergehenden, im angegebenen Falle: तस्मादमृत्रै-
वाङ्गुलीन्येदमृत्र वाचं यच्छेत् CAT. Br. 3, 2, 1, 36. स यदमृत्र राजानं क्रेष्य-
नुप्रेष्यन्त्यजते 4, 5, 1, 2. 1, 9, 1, 13. 14. 6, 3, 1, 14. — 3) dort oben, im Him-
mel, im Jenseits, im künftigen Leben AK. 3, 5, 8. H. 1528. अमृत्रामुष्मि-
होके VS. 17, 2. सामृत्र वृष्टिर्भवति CAT. Br. 7, 4, 2, 22. 2, 2, 3, 6. 3, 6, 3, 18.
4, 3, 1, 32. u. s. w. KĀTJ. CR. 3, 4, 30. ĀCV. GRHJ. 4, 4. M. 3, 181. 4, 168. 239.
5, 53. 9, 139. 322. 12, 89. BHAG. 6, 40. BRĀHMAN. 2, 5. PRAB. 100, 8. अमृत्रा-
र्थम् M. 7, 95. — 4) hier: अनेनैवार्धकाः सर्वे नगरे ऽमृत्र (hier in der Stadt)
भन्तिताः KATHĀS. 24, 208. — 5) dorthin: अयं मामृत्रं गादितः AV. 8, 1, 18.

अमृत्रभूय (अमृत्र + भूय) n. das Dortsein, näml. in jener Welt, d. i.
das Gestorbensein: अमृत्रभूयादधु यद्यमस्य बृहस्पते अभिर्गस्तेरमुञ्चः VS.
27, 9.

अमृथा (von अमु) adv. auf jene Weise, so, in der euphem. Redensart
mit अमु sein: इत्थं नो सो ऽमृथास्यो न एतदतिक्रामात् fürwahr dem soll
es so und so, d. h. übel ergehen, welcher u. s. w. CAT. Br. 3, 4, 2, 13. Nir. 3,
16. — Vgl. अमुया.

अमृद्वञ्च = अमृमुयञ्च Vop. 26, 80.

अमृमुयञ्च adj. nom. ऽयङ्, f. ऽमृर्चि, = अमृमञ्चति, ein aus अमु und अञ्च
künstlich gebildetes Wort, Siddh. K. zu P. 8, 2, 80. 81. Vop. 26, 80. 3,
148. 4, 12. — Vgl. अद्वञ्च.

अमृया (von अमु) adv. auf jene Art, so oder so: मा मातरंमया पत्न्ये
कः RV. 4, 18, 1. जिनानि वेदमुयाकृतिं वा धुनिः 5, 34, 5. नदं न भिन्नमया
शयानम् 1, 32, 8. अश्वीरा तनुर्भवति रुशती पाययामया 10, 85, 30. (गर्भो) नुवतं
पाययामया 1, 29, 5. AV. 7, 56, 6. In Verbindung mit अमु und भूः so und
so sein, dahin sein, verloren sein: अयं द्वेषास्यमया भवतु AV. 5, 22, 1.
नामया भूयम् CAT. Br. 1, 6, 3, 17. यदेदं नामयासत् 7, 4, 5. यदेवास्य विशस्य-
मानस्य किं चित्स्कन्दति तदेतस्मिन्प्रतिष्ठति तथा नामया भवति 3, 8, 1,
14. यदै रेतसो योनिमतिरिच्यते ऽमुया तद्वति 6, 3, 3, 26. 1, 7, 2, 13. 14. 3,
8, 2, 28.

अमृर्हि (wie eben) adv. zu der Zeit, dann: अमृर्ह्येव दद्याद्यदस्योपक-
ल्पते CAT. Br. 6, 2, 2, 40. damals: यदा एते ऽमृर्ह्यधियत तदेवाप्यथ्य कुर्वति
14, 4, 2, 34. = Brh. Ār. Up. 1, 5, 23.

अमृवत् (wie eben) adv. wie der und der: मनुष्यद्वरतवदमृवदिति यजमा-
नार्येयाण्यक्त KĀTJ. CR. 3, 2, 7.

अमृप्यकुल (अमृप्य, gen. zu अदम्, + कुल) adj. aus dem Geschlecht des
und des gaṇa प्रतिजनादि und मनोशादि. Vgl. अमृप्यकुलक, ऽकुलिका,
कुलीन, अमृप्यायण.

अमृप्यपुत्र (अमृप्य + पुत्र) m. der Sohn des und des, der Sohn eines
berühmten Mannes H. 502. GAṬĀDH. im ÇKDr. gaṇa मनोशादि.

अमृदत्त, अमृदम् und अमृदश (von अमु + दत्त u. s. w.) adj. dem und
dem ähnlich Siddh. K. 62, a, 13. Vop. 26, 83, 85.

अमृ (3. अ + मृ) adj. irrthumlos, untrüglich: सं ज्ञानत् स्वैर्दत्तैर्मृगाः
RV. 1, 68, 4 (8). विश्वे अमृता अमृगाः 72, 2. कविम् 3, 19, 1. स्पशा अर्द्धासा
अमृगाः 6, 67, 5. निचेतारः 10, 61, 27. 3, 23, 3. 4, 11, 5. 6, 13, 17. 7, 61, 5. 10,
4, 4. Nir. 6, 8. 11, 2. — AV. 5, 1, 9. und 11, 5, wo die Hdschr. अमृ (voc.)
haben, ist, wie das Metrum zeigt, ebenfalls अमृ zu lesen.

अमृत् (3. अ + मृत्) adj. unkörperlich: द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्ते चैवामृते
च CAT. Br. 14, 5, 3, 1. = Brh. Ār. Up. 2, 3, 1. Muṇḍ. Up. 2, 1, 2. PRAÇNOP.
1, 5. KATHĀS. 20, 70. PRAB. 71, 13. Vop. 23, 29.

अमृतरत्नम् (अ + रत्न) m. N. pr. ein Sohn Kuṣa's von der Vaidar-
bhī R. 1, 34, 3. Varianten dieses Namens: अमृतर्य, अमृतरय (MBh. 12, 6194),
अमृतरयस, अमृतिमत् VP. 399 (vgl. N. 9).

अमृल (3. अ + मृल) 1) adj. f. आ P. 4, 1, 64, Vārt. 3. Vop. 4, 15. un-
bewurzelt; ohne Halt (Gegens. मूलिनः) द्वयं वा इदं जीवनं मूलि चैवामूलं
च । पशवो ऽमृला शेषधयो मूलिन्यः CAT. Br. 2, 3, 1, 10. 1, 8, 3, 15. 5, 1, 3,
3. अतरितं वा अमु रत्नश्चरत्यमूलमुपयतः परिच्छिन्नम् 1, 1, 2, 4. 3, 1, 2, 13.
8, 1, 12. 2, 15. 4, 1, 1, 20. — 2) f. मृला Methonica superba Lam. (अग्निशि-
खी), vom Liliengeschlecht, mit giftiger Knolle, ÇARDAK. im ÇKDr. Hier-
her könnte gezogen werden: यो ते चक्रुरमृलायां क्लगं वा नराच्याम् ।
तेत्रै ते कृत्याम् AV. 5, 31, 4.

अमृक्त (3. अ + मृक्त von मर्च्) adj. unversehrt, unverkümmert: वासंता
RV. 9, 69, 5. पात्रम् 2, 37, 4. रथः 7, 37, 1. रत्नम् 2. रातिः 8, 24, 9. वाङ्मा
को वज्ररुस्तः । सनादमृक्ता द्यते 2, 31. सप्तयो देवोः सुरणा अमृक्ताः 10,
104, 8. 3, 1, 6. 11, 6. 4, 3, 12. 6, 1, 4.

अमृणाल (3. अ + मृण) n. die wohlriechende Wurzel des Andropogon
muricatus (वीरणा), aus welcher Matten, Schirme u. s. w. geflochten
werden, AK. 2, 4, 3, 30.

अमृत (3. अ + मृत) P. 6, 2, 116. 1) adj. f. आ. a) nicht gestorben Brh.
MAN. 3, 18. — b) unsterblich Kār. zu P. 3, 2, 188. यक्ष्यं पृश्निमातरो मर्ता-
सः स्यातन । स्तोता वो अमृतः स्यात् ॥ RV. 1, 38, 4. मर्तव्यमृता न धीयि
7, 4, 4. अयाम् सोमममृता अभूम् 8, 48, 1. 1, 166, 3. 3, 20, 3. 4, 33, 8. u. s. w.
CAT. Br. 2, 2, 2, 8. wie die Götter unsterblich wurden 9, 5, 1, 7. 11, 2, 3, 6.
unsterblich wird man nur कर्मणा विख्या वा 10, 4, 3, 9. तस्य ह प्रजापतेः ।
अर्धमेव मर्त्यमर्धममृतम् 1, 3, 2, 4, 1. Brh. Ār. Up. 1, 4, 6. ÇVETĀCV. Up. 3, 1. BHAG.
14, 27. subst. ein unsterbliches, gottähnliches Wesen H. an. 3, 236. MED.
1. 77. तमा नो अर्कममृताय नृष्टमिमे धासुर्मृतासः पुराजाः RV. 7, 97, 5. क-
स्यं नूनं केतुमस्यामृतानो मनोमक्ते चार्ह देवस्य नाम 1, 24, 1. 72, 2, 10. 189,
3. 3, 21, 1. 4, 42, 1. u. s. w. fem.: यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक् 10, 93, 9.
17, 2. — c) unvergänglich: कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिखीः RV. 3, 43, 5.
ईशेक्ष्यमृमृतस्य भूररिणि रायः सुवीर्यस्य दतीः 7, 4, 6. इदं त्यत्पात्रमिन्द्र-
पान्मिन्द्रस्य प्रियममृतमयायि 6, 44, 16. VS. 4, 18. 26. यज्योतिरुत्तरमृतं
प्रजासु 34, 3. Auf solche Stellen mag zum Theil die Bedeutung Gold
gegründet sein; vgl. 4, 1. — d) = सुन्दर schön und = अतिहृद्य sehr
lieblich Vāpi im ÇKDr. (hier als m.). — 2) m. a) Gott, s. u. 1, b. —
b) N. einer Wurzel (वाराहीकन्द) RĀGAN. im ÇKDr. — c) N. einer Pflanze,
Phaseolus trilobus Ait. (वनमुद्ग) id. — d) ein Bein. Çiva's ÇIV. —
e) ein Bein. Dhanvantari's H. an. 3, 236. MED. t. 77. — 3) f. मृता a)